ISSN 2321-0567
Vol. X, Issue II (Oct. – 2022)

देशभक्ति गीतों के संदर्भ में सिनेमा के अंतर्गत योगदान देने वाली विभूतियों की भूमिका

प्रोमिला देवी
पीएच.डी. शोधार्थी,
संगीत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा)

भारतीय हिन्दी सिनेमा माननीय भावनाओं का ऐसा अनूठा सागर है जिसमें काल दर काल अनेक प्रतिभाशाली कलाकारों तथा कला साधकों ने अपने–अपने योगदान रूपी बून्दें अर्पित कर इसे विशालकर बनाया है। निश्चित ही सिनेमा का यह विकास किसी एक या दो व्यक्तियों की देन नहीं था अपितु अनेक कलाकारों की मेहनत का परिणाम था। यही कारण था कि सिनेमा जिसने बहुत कम समय में एक बड़ी आबादी को प्रभावित करने का कार्य किया तथा सभी वर्गों के मनोरंजन के लिए अपने भीतर कुछ ना कुछ संजो कर रखा। एक युग था जब जनता रजत पथ पर केवल चलती फिरती छायाओं को देख कर ही अपना मनोरंजन कर लेती थी विज्ञान की प्रगति के साथ ही इन छायाओं ने स्वर भी प्राप्त कर लिया था इसके साथ ही चलचित्र जगत में पदार्पण किया तथा फिर पार्श्व गायन पद्धति के प्रचलन के पश्चात् से संगीत की अन्य शाखाओं यथा शास्त्रीय संगीत लोक संगीत, सुगम संगीत की भांति कुछ विद्वानों ने फिल्म संगीत नामक एक अलग से शाखा स्वीकार कर ली।[1]

जीवन के एकान्त क्षणों में जब मानव जीवन में फैले हुए परम सत्य का दर्शन करने के लिए अपनी आकुल भावना का अभिसार करता है और आराधना की विभिन्न भूमिकाओं में आत्मदर्शन करता हुआ जब वह विश्व दृष्टा बन जाता है तब उसे कहा जाता है ''कलाकार''।[2] कला के इस महा संगम में अनेक कलाकारों ने अपनी कला को साझा करती हुए अपना अविस्मरणीय योगदान दिया। सिनेमा पर विहंगम दृष्टिपात करने से यह सहज ही ज्ञात होता है कि आरंभिक काल से लेकर वर्तमान तक अनेक फिल्म निर्माताओं ने फिल्म संगीत तथा सिनेमा को अपनी प्रतिभा व उत्कृष्ट कला से युक्त करते हुए सिनेमा के विकास में चार चांद लगा दिये।

हिन्दी सिनेमा को देशभक्ति गीत देने वाले गीतकारों की भूमिका :

सिने संगीत सर्वसुलभ है, इसलिए इसमें जनरूचि को जागृत करने की बड़ी शक्ति होती है। भाषा सरल व सार्थक होती है तथा रचना सुगम व सीधा प्रभाव डालने वाली होती है। गीत शब्द स्पष्ट, भावपूर्ण तथा मधुरतापूर्वक गाये जाते है फिल्म संगीत के ये गुण अनुकरणीय हैं इसमें कोई सन्देह नहीं। विख्यात सितारवादक पं. रविशंकर लिखते हैं, ''जनता को संगीतप्रिय बनाने में फिल्मी गानों का बहुत बड़ा हाथ है इसके दो मुख्य कारण है। एक तो फिल्मी गातों का कवित्व आम लोगों की समझ में आ जाता है, दूसरा गीतों की धुनों को हर कोई आसानी से

1 फिल्मी शास्त्रीय गीत अंक भाग 1 पृष्ठ 10

2 ममता देवी, समकालीन हिन्दी नाटकों के विविध आयम, पृ. 12।

गा लेता है''[3] हिन्दी सिनेमा में अनेक प्रतिभाशाली गीतकार हुए जिन्होनें समय–समय पर जनरूचियों के अनुसार अनेक सदाबहार गीत दिए। यदि देशभक्ति गीतों के संदर्भ में बात करें तो पाश्रर्व गायन की परंपरा के आरम्भ से लेकर वर्तमान तक अनेक कवियों गीतकारों ने उच्चकोटि के देशभक्ति गीतों की माला हिन्दी सिनेमा के लिए पिरोई।

सिनेमा अपने आरम्भ से लेकर अंत तक साहित्य, यानी रचना से जुड़ा हुआ होता है इसलिए यह कहना शायद गलत नहीं होगा कि साहित्य और सिनेमा के बीच जो अन्तरकला संबंध है, वह शायद दूसरी कलाओं में नहीं मिलता यह वह आधारभूत संबंध है, जिसके चलते साहित्य और सिनेमा को एक दूसरे से पूरी तरह अलग करके नहीं देखा जा सकता।[4] सिनेमा के अन्तर्गत अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले कवियों अथवा साहित्यकारों की भूमिका को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है।

कवि प्रदीप :

फिल्मों में संगीत के शुरूआती दौर व देशभक्ति गीतों के इतिहास में कवि प्रदीप का योगदान अतुलनीय रहा। 1943 में बनी फिल्म 'किस्मत' के गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिन्दुस्तान हमारा है'' ने उन्हें देशभक्ति गीतों के रचनाकारों में अमर कर दिया। इस गीत ने क्रोधित होकर तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने कवि प्रदीप की गिरफ्तारी के आदेश दिए। जिसके कारण इन्हें भूमिगत होना पड़ा।[5] विदेशी और क्रूर हुकूमत के रहते इस प्रकार के गीत लिखना अपने आप में बहुत हिम्मत का काम था। कवि प्रदीप ने हिन्दी सिनेमा को बहुत से देशभक्ति गीत दिए जैसेः– 'आओ बच्चो तुम्हें दिखायें झांकी हिन्दुस्तान की' (जागृति), 'हम लाएं हैं तूफान से किश्ती निकाल के' (जागृति), 'बिगुल बज रहा आज़ादी का' (तलाक), 'जन्म भूमि माँ' (नेताजी सुभाषचंद्र बोस), 'सुनो रे सुनो देश के हिन्दू मुसलमान' (नेताजी सुभाषचन्द्र बोस), 'दुश्मनों सावधान' (नेताजी सुभाषचन्द्र बोस) आदि।

आनंद बख्शी :

आनंद बख्शी हिन्दी सिनेमा के बहुमूल्य रत्न थे जिन्होनें अपने 40 वर्ष से अधिक के फिल्म कैरियर में चार हजार से भी ज्यादा गीत लिखे। इन्हें फिल्मफेयर अवार्ड के लिए चालीस बार नामांकित किया गया, जिसमें से 4 चार बार विजयी रहे। इन्होनें बड़ी संख्या में देशभक्ति गीत लिखे जो जन मानस के बीच अत्यन्त लोकप्रिय हुए। इनके लिखे कुछ प्रसिद्ध गीत इस प्रकार हैः– 'वतन पे जो फिदा होगा' (फूल बने अंगारे), 'मेरे देश में पवन चली पुरवाई' (जिगरी दोस्त), 'दिल दिया है जान भी देंगें (कर्मा), 'देखो वीर जवानों अपने' (आक्रमण), 'मेरे देश प्रेमियों' (देश प्रेमी), 'चिट्ठी आई है' (नाम), 'आई लव माई इंडिया (परदेश), 'वतन वालों वतन न बेच देना' (इंडियन) आदि।

प्रेम धवन :

बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रेम धवन ने अपनी फिल्मी कैरियर की शुरूआत सहायक संगीतकार के रूप में की थी। कुछ फिल्मों में उन्हीनें अभिनय और नृत्य निर्देशन भी किया, लेकिन बाद में उनके गीतों ने ही उन्हें सिनेजगत में स्थायी मकाम दिलवाया।

3 सीमा जौहरी, फिल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनके समकालीन संगीतकार पृष्ठ 7

4 डॉ. सी. भास्कर राव, फिल्म और फिल्मकार, पृ. 125।

5 कवि प्रदीप विकिपीडिया।

ISSN 2321-0567
Vol. X, Issue II (Oct. – 2022)

उनके लिखे गीतों को बहुत लोकप्रियता मिली। इनके लिखे प्रमुख देशभक्ति गीत 'ऐ मेरे प्यारे वतन' (काबुलीवाला), 'मेरा रंग दे बसंती चोला' (शहीद), 'ऐ वतन ऐ वतन हमको तेरी कसम' (शहीद), 'छोड़ो कल की बातें' (हम हिन्दुस्तानी), 'बुला रहा तुझे वतन' (मेरा देश मेरा धर्म) आदि गीत श्रोताओं के दिलों पर आज भी राज करते हैं।

शकील बदायूनी :

अदब के इतिहास में अपनी गजलों और गीतों से शकील बदायूनी अमर हो गए। मात्र 13 साल की आयु से ही काव्य कला के माहिर इस महान कवि ने फिल्म जगत को एक से बढ़कर एक नगमों से सजा दिया। ये ऐसे गीतकार थे जिन्हें सिनेजगत में अभिनेताओं जैसी तरजीह मिली। बात देशभक्ति गीतों की करें तो इनके लिखे गीतों ने समस्त भारतीयों के भीतर जन चेतना जगाने का काम किया। इनके लिखे देशभक्ति गीतों में मुख्य रूप से 'अपनी आज़ादी को हम हरगिज मिटा सकते नहीं' (लीडर), 'नन्हा मुन्ना राही हूँ' (सन ऑफ इंडिया), 'नौजवानों भारत की तकदीर बना दो' (कुंदन), 'इंसाफ की डगर पे' (गंगा जमुना) आदि हैं।

इन्दीवर :

श्यामलाल बाबू राय उर्फ इन्दीवर हिन्दी सिनेजगत के मशहूर गीतकारों में से एक थे। 1976 में फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मनित इन्दीवर ने सिनेमा को एक हजार से अधिक दिल छू लेने वाले नग़में दिए। इनके लिखे देशभक्ति गीत जनसामान्य के बीच बहुत लोकप्रिय हुए। इन्दीवर के लिखे देशभक्ति गीतों में मुख्य रूप से 'है प्रीत जहाँ की रीत सदा' (पूरब और पश्चिम), 'आज गालो मुस्कुरालो' (ललकार), 'आजादी आई भी तो क्या' (द गोल्ड मेडल), 'जन्नत की है तस्वीर न देंगें' (जोहर इन कश्मीर) 'बेगुनाहों का लहू है रंग लाएगा' (जोहर इन कश्मीर) आदि हैं।

90 के दशक में गीतकार जावेद अख्तर व समीर के देशभक्ति गीतों ने हिन्दी सिनेमा में धूम मचाई उन्होंने एक के बाद एक सुपरहिट गीत दिए। इनके गीतों में मुख्य रूप से 'संदेसे आते हैं' (बॉर्डर), 'मेरा मुल्क मेरा देश' (दिलजले), 'फिर भी दिल है हिंदुस्तानी' (फिर भी दिल है हिंदुस्तानी) इत्यादि व समीर के गीतों में 'देश मेरे देश मेरे' (द लीजेंड ऑफ भगत सिंह), 'सुनो गोर से दुनिया वालो' (दस), इत्यादि गीत सिनेमा के बहु प्रसिद्ध गीत रहे हैं।

देशभक्ति गीतों को संगीतबद्ध करने वाले संगीतकारों की भूमिका :

फिल्म का संगीत तैयार करने में गायकों व वादकों की एक बड़ी टोली कार्यरत रहती है। तब जाकर बड़े परिश्रम के बाद वह चीज़ तैयार होकर सामने आती है जिसे फिल्म संगीत कहते है।[6] इस बड़ी टोली का प्रधान जो व्यक्ति होता है वह संगीत निर्देशक अर्थात संगीतकार कहलाता है। सिनेमा में पार्श्व गायन का आरम्भ होने के साथ ही देशभक्ति भारत का मुख्य विषय रही, और देश को गुलामी से आज़ादी दिलवाने के संघर्षपूर्ण गीतों का गौरवमयी इतिहास रचा गया। तब से लेकर वर्तमान तक देशभक्ति गीतों का यह सिलसिला रूका नहीं और अनेक महान संगीतकारों ने देशभक्ति गीतों की

6 सीमा जौहरी, फिल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनकें समकालीन संगीतकार, पृ. 119।

ISSN 2321-0567
Vol. X, Issue II (Oct. – 2022)

सुदंर लड़ी में अपने अनुभव और हुनर रूपी मोती पिरोने का काम किया।

देश की आम जनता को सुरों से परिचित कराने एवं उन्हें गुन गुनाने की प्रेरणा उस्तादों अथवा पंडितों से नहीं मिली अपितु इसका श्रेय इस चलचित्र संगीत एवं संगीत निर्देशकों को ही जाता है और वर्षों पूरानी धुनें आज भी अमूल्य धरोहर हैं।[7] हिन्दी सिनेमा ने सवाक चित्रपट युग के आरम्भ से लेकर वर्तमान तक अनेक पडावों को देखा।

एक कुशल संगीतकार को किसी भी चित्रपट के गीत की संगीत–रचना करते समय उस गीत के प्रसंग या स्थिति तथा भाव का विशेष रूप से ख्याल रखना पड़ता है। गीतकार और संगीतकार का आपसी सामंजस्य अनिवार्य है। इसीलिए संगीतकार, गीतकार तथा चित्रपट निर्देशक का परस्पर बार–बार मिलना बहुत आवश्यक है। ये तीनों मिलकर आपस में चित्रपट के प्रसंग या स्थिति तथा भाव के विषय में चर्चा करते है। चित्रपट निर्देशक, चित्रपट से सम्बधित सभी बातें संगीतकार को समझाता है। इसके अलावा यह भी समझाता है कि इन गीतों का चित्रांकन किस प्रकार से किया जाएगा। इन सभी बातों को अपने मन में रखकर संगीतकार, गीत की संगीत–रचना करता है।[8] यह संगीतकारों का ही संघर्ष था कि आज फिल्म संगीत दुनिया का सर्वश्रेष्ठ मनोरंजन का साधन बनकर खड़ा हो गया है। लगभग 1940 से शुरू हुए देशभक्ति गातों का सिलसिला आज 21वीं शताब्दी में भी अनावरत जारी है। अनेक संगीतकारों ने अपने संघर्ष और मेहनत से देशभक्ति गीतों का एक बड़ा भण्डारा रख छोड़ा है जो पीढ़ी दर पीढ़ी देश वासियों को राष्ट्र प्रेम के लिए प्रेरित करता रहेगा।

50 और 60 के दशक में देशभक्ति गीतों का श्रेय मूल रूप से सी. रामचन्द्र, दत्ता देवजेकर, हंसराज बहल, हेमन्त कुमार, वसन्त देसाई, ओ.पी. नैयर, अनिल विस्वास आदि संगीतकारों को जाता है। फिल्म समाधि (1950) का गीत 'कदम–कदम बढाये जा' बहुत प्रसिद्ध हुआ जो सी रामचन्द्र जी द्वारा संगीतबद्ध गीतों में से एक है। इसके अलावा हेमन्त कुमार द्वारा संगीतबद्ध 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ' व 'हम लाए है तुफान से किश्ती निकाल के' दोनों ही गीत फिल्म 'जागृति' के बहुत ही प्रसिद्ध गीत है। 1960 से 1980 के बीच शंकर–जयकिशन, ऊषा खन्ना, सलिल चौधरी, नौशाद, कल्याण जी आनन्द जी, प्रेम धवन आदि संगीतकारों के कला कौशल से सिनेमा जगत का परिचय हुआ। इन कलाकारों ने अनेक सुरीले देशभक्ति गीत दिये। फिल्म 'जिस देश में गंगा बहती है' का टाइटल सांग जिसे शंकर जयकिशन ने संगीत बद्ध किया। ऊषा खन्ना द्वारा संगीत बद्ध गीत 'छोड़ो कल की बातें' जो फिल्म 'हम हिन्दुस्तानी' (1960) का अत्यन्त प्रसिद्ध गीत है। इसके अलावा सलिल चौधरी द्वारा संगीत बद्ध 'गीत ए मेरे प्यारे वतन' फिल्म 'काबुलीवाला' (1961) व नौशाद द्वारा संगीत बद्ध गीत 'अपनी आजादी को हम' फिल्म 'लीडर' (1964) आदि गीत फिल्म इतिहास के लोकप्रिय गीत हैं। फिल्म 'उपकार' से कल्याण ाजी–आनन्दजी द्वारा संगीतबद्ध 'मेरे देश की धरती' जो आज भी समस्त भारतवासियों के हृदय को छू जाता है वहीं प्रेम धवन द्वारा संगीतबद्ध गीत 'मेरा रंग

7 लावण्य कीर्ति सिंह काव्या, हिन्दी चलचित्र जगत के सफलतम संगीत निर्देशकद्वय, लक्ष्मीकांत प्यारे लाल भाग–1 पृ. 1

8 डॉ. सुशील कुमार लोहट, चित्रपट संगीत के बहुआयामी संगीकार मदनमोहन, पृ. 13।

दे बसन्ती चोला', फिल्म 'शहीद' 1965 का यह गीत आज भी युवाओं का प्रेरणास्त्रोत है।

1980 से लेकर 2021 तक भारतीय हिन्दी सिनेमा में नवीन प्रयोगों का बोलबाला रहा एक ओर लक्ष्मीकांत प्यारे लाल का सुरीला समय चल रहा था वहीं नये संगीतकारों जैसे ए.आर. रहमान, नदीम–श्रवण, जतिन–ललित आनन्द राज आनन्द, अनुमलिक आदि संगीतकारों की नवीन प्रतिभाओं ने हिन्दी सिनेमा में देशभक्ति गीतों की झड़ी लगा दी। फिल्म 'कर्मा' (1986) का गीत 'दिल दिया है जां भी देंगें', 'आई लव माई इंडिया' फिल्म 'परदेश' (1997) जिसमें नदीम श्रवण का संगीत था। गीत 'ये जो देश है तेरा' जिसमें ए.आर. रहमान का संगीत था, फिल्म 'वीर जारा' (2004) का गीत 'ऐसा देश है मेरा' आदि गीतों ने हिन्दी सिनेमा में देशभक्ति गीतों की यात्रा को और अधिक स्वर्णिम बना दिया है।

देशभक्ति गीतों को स्वरों से सजानें वाले पार्श्व गायक–गायिकाओं का योगदान :

सिनेमा का सुमधुर संगीत जिसे अभिनेता व अभिनेत्रियों द्वारा जनता के समक्ष रखा जाता है असल में उसका श्रेय पर्दे के पीछे हमारे जादुई आवाज के धनी गायक–गायिकाओं को जाता है। संगीत निर्देशकों संग दिन–रात कड़ी मेहनत करने के पश्चात ही किसी गायक–गायिका की सुमधुर आवाज हम श्रोता सुधी तक पहुँच पाती है। फिल्म संगीत के अन्तर्गत देशभक्ति गीतों का गायन करने वाले पार्श्व गायक गायिकाओं का योगदान हिन्दी सिनेमा व समस्त भारतवर्ष कभी भूल नहीं सकेगा। स्वतंत्रता के पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय सिनेमा के गायन करने वाले कलाकारों की एक अच्छी खासी तादात हमारे समक्ष दिखाई देती है। (1940 से 1960) की बात करें तो आरम्भ में अमीराबाई कर्नाटकी, खान मस्ताना, मसूद परवेज, सितारा कानपुरी, जयश्री शमशाद बेगम, गीता दत्त, जी.एम. साजन, परमोदिनी देसाई, आशा भौंसले, मोहम्मद रफी, हेमन्त कुमार, मन्ना डे आदि गायक–गायिकाओं का योगदान अधिक देखने को मिला।

फिल्म रूपा 1946 का एक मधुर गीत वतन की अमानत मेरी जिन्दगी है जिसे शमशाद बेगम ने स्वरों से सजाया है। इसी प्रकार फिल्म खामोश 1950 का अत्यन्त भावपूर्ण गीत उठो बुलबुलो तोड़ दो तिलियाँ जिसे मोहम्मद रफी व गीता दत्त ने स्वरों से सजाया गीत भारतीय सिनेमा व देशभक्ति गीतों के इतिहास में अमर हो जाने वाले गीत हैं।

फिल्म 'श्री 420' 1955 का एक गीत जिसे मुकेश की आवाज में गाया गया है। 'मेरा जूता है जापानी' यह गीत देशभक्ति की अनूठी मिसाल है।

यद्यपि देशभक्ति गीतों के लिए मोहम्मद रफी का योगदान सर्वाधिक रहा और कई दशक तक वे देशभक्ति गीतों द्वारा जन मानस के दिलों पर राज करते रहे, फिर भी शायद ही कोई गायक–गायिका ऐसे रहे होगें जिन्होनें देशभक्ति गीतों की रसधारा में अपना कोई योगदान न दिया हो। 1970 से 2000 तक अनेक नये गायक–गायिकाओं का आगमन हुआ जैसे महेन्द्र कपूर, मोहम्मद अजीज, कविता कृष्णामूर्ति, हरिहरण, कुमार शानू, शंकर महादेवन, सुखविन्द्र सिंह, उदित नारायण, रूप कुमार राठौड़, अभिजीत भट्टाचार्य आदि कलाकारों के रूप में श्रोताओं को पुरानी नई आवाजों के साथ देशभक्ति गीतों को रसास्वादन करने का अवसर मिला सन 2001 से

आधुनिकता और नई जन रूचियों के फलस्वरूप देशभक्ति गीतों को एक नया व मनोरंजक रूप देखने–सुनने को मिला।

1970 से 2000 के मध्य में दिल को छू लेने वाले अनेक देशभक्ति गीतों का निर्माण हुआ। फिल्म 'ललकार' (1972) में इन्दीवर का लिखा, आनन्दजी कल्याण जी द्वारा संगीतबद्ध व मोहम्मद रफी द्वारा गाया गया गीत 'आज गालों मुस्कुरालो' वीर सैनिकों के जीवन की सच्चाई को बयान करता हुआ अत्यन्त मार्मिक यह गीत है। फिल्म 'कांन्ति (1982) का गीत 'अब के बरस तुझे धरती की रानी कर देगें' महेन्द्र कपूर का गाया यह गीत बहुत लोकप्रिय हुआ। इसी प्रकार भारत के राष्ट्रीय ध्वज को समर्पित गीत 'मेरी जान तिरंगा है' जोकि फिल्म 'तिरंगा' (1993) में मोहम्मद अजीज के मर्म स्पर्शी कण्ठ से सुसज्जित है। यह सभी गीत भारतीय हिन्दी सिनेमा का गौरव है इन्हें भुल पाना हम भारतीयों के लिए सहज नहीं।

इस कालखण्ड में बेहद सुरीले कण्ठ के गायक गायिकाओं ने देशभक्ति गीतों की हृदय मोहक रसधारा बिखेरी। नये गायकों के रूप में अरिजीत सिंह, अल्का याग्निक, चित्र, सलीम, मर्चेंट, विशाल ददलानी, दिव्य कुमार, शशि सुमन, बी. पराक, सुनीधी चौहान, श्रेया घोषाल, राना मजूमदार, श्रीया पारीक, के.के., नीति मोहन, सलमान अली उपरोक्त में कई कलाकार ऐसे है जो हिन्दी सिनेमा में पार्श्व गायन में वरिष्ठ है परन्तु इस समय अवधी में उनके गीतों ने खूब लोकप्रियता हासिल की 2001 से वर्तमान तक के कुछ प्रसिद्ध गीत जिनके गायन की बहुत सरहाना मिली। 2004 में बनी फिल्म 'स्वदेश' जिसका गीत 'ये देश है तेरा', अत्यन्त लोकप्रिय हुआ जिसे संगीतकार ए.आर. रहमान ने स्वर दिये। फिल्म 'राजी' (2018) का एक गीत 'ए वतन–वतन' मेरे आबाद रहे तू' जिसे सुमधुर कण्ठ दिये थे सुनिधि चौहान व अरिजीत सिंह ने, इस गीत को भारत की जनता ने बहुत पसन्द किया। इसी प्रकार अत्यन्त सुप्रसिद्ध व बच्चे बच्चे की जुबान बन रहा गीत 'तेरी मिट्टी में मिल जावां' फिल्म केसरी (2019) से जिसे स्वर दिये है बी. पराक ने। यह गीत बहुत भावपूर्ण, हृदयस्पर्शी गीत है।

इस प्रकार देशभक्ति गीतों की रसधारा में अनेक सुरीले कण्ठ काल दर काल समाज की मांग के अनुसार अपना बहूमूल्य योगदान देते रहे जिसके फलस्वरूप आज हमारे पास देशभक्ति गीतों का एक विशाल भण्डार तो है ही साथ ही सिनेमा के महान कलाकारों के रूप में अनमोल रत्न भी हैं जिन्हें पाकर सिनेमा स्वयं ही गौरवान्वित हो गया है।

देशभक्ति गीतों व तत सम्बन्धित अभिनेता व अभिनेत्रियों का हिन्दी सिनेमा व देशभक्ति गीतों के लिए योगदान :

विश्व रूपी विशाल रंग मंच पर किसी अदृश्य निर्देशक के संकेतों पर अभिनय करने वाला मानव मात्र एक अभिनेता है। दार्शनिकों द्वारा की गई मानव की यह व्याख्या उसकी अभिनयवादी प्रवृति की ओर संकेत करती है।इसी प्रवृति की प्ररेणा से सुख–दुख के विविध रंगों में डूबा मानव अपने आस–पास के वातावरण से प्रभावित होकर रस ग्रहण करता है।[9]

मानव की यह प्रवृति हिन्दी सिनेमा के विकास की ओर भी इंगित करती है। अनेक रसों की निष्पत्ति के साथ देशभक्ति की भावना को प्रदर्शित करने वाले अनेक अभिनय कलाकरों ने हिन्दी सिनेमा में अपनी

9 ममता देवी, समकालीन हिन्दी नाटकों के विविध आयाम, पृ. 13

ISSN 2321-0567
Vol. X, Issue II (Oct. – 2022)

कला का जादू बिखेरा। देशभक्ति पर बनी फिल्मों या देशभक्ति गीत देने वाली फिल्मों के आरंभिक काल अर्थात 50, 60 के दशक में अशोक कुमार, मुमताज, शमीम बानो, जीवन, वी शान्ताराम, जयश्री, पृथ्वी राज कपूर, गीत बाली, महताब, सोहराब मोदी, निरूपा रॉय, दिलीप कुमार, वैजयन्ती माला, कामिनि कौशल आदि रहे इनकी कुछ चुनिंदा फिल्में इस प्रकार है :–

	फिल्म	**अभिनय**
1.	किस्मत (1943)	अशोक कुमार, मुमताज, शहनवाज, महमूद
2.	शहीद (1948)	कामिनी कौशल, दिलीप कुमार
3.	झांसी की रानी (1953)	महताब, सोहराब मोदी
4.	आनन्द मठ (1952)	पृथ्वीराज कपूर, गीता बाली, भारत भूषण
5.	नया दौर (1957)	दिलीप कुमार, वैजयन्ती माला
6.	समाधि (1950)	अशोक कुमार, नलिनी जयवन्त, कुलदीप कौर

70 के दशक में भी दिलीप कुमार, वैजयन्ती माला का जादू चलता रहा व 1964 में फिल्म 'लीडर' में दोनों कलाकार मुख्य भूमिका में रहें। इसके अलावा मनोज कुमार, धमेन्द्र, माला सिन्हा, आशा पारेख आदि ने निम्न फिल्मों में काम किया :–

1.	उपकार (1967)	आशा पारेख, मनोज कुमार
2.	आखें (1968)	धर्मेन्द्र, माला सिन्हा
3.	पूरब और पश्चिम (1970)	मनोज कुमार, सायरा बानो
4.	हकीकत (1964)	धर्मेन्द्र, प्रिया राजवंश

1970 से 1990 के दौर में राजेश खन्ना, रेखा, हेमा मालिनी, अमिताभ बच्चन, जितेन्द्र, इत्यादि प्रतिभाओं का आगमन हुआ। दिलीप कुमार व मनोज कुमार का देशभक्ति गीतों व सम्बन्धित फिल्मों के लिए अतुलनीय योगदान रहा। जहां शहीद (1948), कर्मा (1986), क्रान्ति (1981) जैसी फिल्मों ने दिलीप कुमार की छवि एक देशभक्त के रूप में गढ़ दी, वहीं उपकार (1967), पूरब और पश्चिम (1970) जैसी फिल्मों ने मनोज कुमार के किरदार को देशभक्त के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया की समस्त भारतीयों के मन मस्तिष्क में मनोज कुमार एक देशभक्त के रूप में स्थापित हो गए।

सदी के अन्तिम दशक से लेकर वर्तमान तक देशभक्ति गीतों से सम्बन्धित फिल्मों में अनेक अभिनय कलाकारों ने हिन्दी सिनेमा में अपनी पहचान बनाई जिनमें से कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार है :–

1.	तिरंगा (1993)	राजकुमार, नाना पाटेकर, ममता कुलकर्णी, वर्षा उसगांवकर
2.	परदेश (1997)	शहरूख खान, महिमा चौधरी
3.	हिन्दूस्तान की कसम (1999)	मनीषा कोईराला, सुष्मिता सेन, अजय देवगन, अभिताभ बच्चन, फरीदा जलाल
4.	सरफरोश (1999)	आमीर खान, सोनाली बेंन्द्रे।
5.	इंडियन (2002)	सनी दयोल, शिल्पा शेट्टी।
6.	स्वदेश (2004)	शाहरूख खान, गायत्री जोशी।

7.	रंग दे बसन्ती (2006)	आमीर खान, सोहा अली खान।
8.	राग देश (2017)	कुणाल कपूर, अमित साध, मोहित मरवाह।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि फिल्म इतिहास में देशभक्ति गीतो की जो अमिट स्थान है उसमें अभिनेता–अभिनेत्रियों का भी विशेष योगदान रहा है।

निष्कर्ष :

सिनेमा में जो भी आज सुनते अथवा देखते है वह अनेक गुणी फिल्मी गीतकारों, संगीतकारों, पार्श्व गायक– गायिकाओं तथा उनसे संबंधित अभिनेता–अभिनेत्रियों की कड़ी मेहनत और कला के प्रति प्रेम व समर्पण का साक्षी है। हिन्दी सिनेमा के इन महान कलाकारों की मेहनत के फलस्वरूप आज सिने संगीत न केवल एक वृहद कला पुंज बनकर समस्त संसार के लिए मनोरंजन कर रहा है बल्कि समस्त संसार की अभिव्यक्ति का विशिष्ट माध्यम भी बन चुका है। इन सब कलाकारों के परिश्रम को देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि सिनेमा संगीत का भविष्य निश्चित रूप से और अधिक रोचक व गौरवशाली होगा।

सन्दर्भ :

1. फिल्मी शास्त्रीय गीत अंक भाग 1 पृष्ठ 10
2. ममता देवी, समकालीन हिन्दी नाटकों के विविध आयम, पृ. 12।
3. सीमा जौहरी, फिल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनके समकालीन संगीतकार पृष्ठ 7
4. डॉ. सी. भास्कर राव, फिल्म और फिल्मकार, पृ. 125।
5. कवि प्रदीप विकिपीडिया।
6. सीमा जौहरी, फिल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनकें समकालीन संगीतकार, पृ. 119।
7. लावण्य कीर्ति सिंह काव्या, हिन्दी चलचित्र जगत के सफलतम संगीत निर्देशकद्वय, लक्ष्मीकांत प्यारे लाल भाग–1 पृ. 1
8. डॉ. सुशील कुमार लोहट, चित्रपट संगीत के बहुआयामी संगीकार मदनमोहन, पृ. 13।
9. ममता देवी, समकालीन हिन्दी नाटकों के विविध आयाम, पृ. 13